मासिक पत्र
JUNE
6

Chandamama, June, '51

Photo by T. Suryanarayan

वाह! वाह!

गोदी का बच्चा

सुपारी काटने की मशीन

पीतल की बनी हुई, चमकदार पालिश की हुई यह मशीन १ घण्टे में ५ सेर तक सुपारी

पत्ती की तरह काट सकती है। मजेदार की बात यह है कि आप जिस प्रकार की सुपारी चाहें पान में डालने लायक दाने, मैनपुरी के पर्त तथा लच्छे, ऐसे आसानी से काट सकते हैं। बेरोजगार ५) रोज तक कमा सकते हैं। गारंटी पत्र सहित मू० ११।।) डा० ख० २।।) अलग।

पता : बंगाल ब्रास एन्ड आइरन वर्क्स (C M)
पो. न. २१ अलीगढ़ (यू.पी.)

जेबी प्रेस (छापाखाना)

जिसमें अंगरेजी, हिन्दी के समस्त अक्षर, स्याही मुहर बनाने के तरीके, पैड इत्यादि हैं। जिस नाम को छापना चाहो पांच मिनिट में तैयार हो जायगा मू. ५) डा. खर्च १।) अलग।

इलेक्ट्रिक गाईड।

इस पुस्तक की सहायता से बिना बिजली का रेडियो केवल १५ रु. में तैयार कर सकते हैं तथा बिजली के काम की पूरी जानकारी प्राप्त कर एक कुशल इंजिनियर बन सकते हैं। (मू. ३।।) डा. खर्च ।।।) पत्र व्यवहार अंग्रेजी में करें

पता : SANSAR TRADING CO.
(C.M.M.) P.O. 31, ALIGARH (U.P.)

बच्चों के लिए २५ पुस्तकें ५) में

निम्नलिखित पुस्तकें विशेष तौर पर बच्चों के लिये ही तैयार की गई हैं। तमाम पुस्तकें चटपटी मजेदार और जादू की कहानियों से भरपूर हैं! टाइटिल भी सुन्दर आकर्षक और दुरंगा है। इन्हें एक बार शुरू करके समाप्त किये बिना छोड़ने को मन नहीं चाहता। जो बालक भी इन्हें पायेंगे, खुशी के मारे बाँसों उछल जायेंगे! इनके नाम यह हैं:—१ तिलस्मी परी, २ तिलस्मी हाथी, ३ जादूगर का मकान, ४ जादूगर की परियाँ, ५ चाँदी का महल, ६ सफेद साँप, ७ अन्धा फकीर, ८ मजेदार कहानियाँ, ९ अलीबाबा चालीस चोर, १० तिलस्मी कहानियाँ, ११ चूहे की शादी, १२ आसमानी भूत, १३ कामरूप का जादूगर, १४ पंछी और हिरनी, १५ जादू का कुआँ, १६ जादू की औरत, १७ तिलस्मी पुतली, १८ लाल पीले भुतने, १९ मसान का जादूगर, २० राजकुमार रणजीत, २१ रानी का सपना, २२ तिलस्मी फाटक, २३ सुल्ताना डाकू २४ हातम ताई, २५ तिलस्मी गुलाम!

इन तमाम पुस्तकों का महसूल १ रु. मिलाकर ये ५ रु. ग्यारह आना की होती हैं। फिर भी हम ग्राहकों को घर बैठे केवल ५) रु. में भेजेंगे। अब तक सैकड़ों बालक यह पुस्तकें मँगवा चुके हैं! स्टाक बहुत कम है, इसलिए आप भी आज ही आर्डर भेज कर घर बैठे २५ पुस्तकों का सेट वी. पी. द्वारा केवल ५ रु. में प्राप्त करें। आर्डर भेजते समय अपना पता साफ-साफ लिखें! आर्डर भेजने का पता यह है:—

रतन बुक डिपो : P.O. बंगला बाजार, लखनऊ (U.P.)

चन्दामामा

माँ - बच्चों का मासिक पत्र
संचालक : चक्रपाणी

एक बार जब नारद जी कंस के दरबार में आए तो उसने उनका सत्कार करके कहा—'मुनिवर! कुछ खबरें सुनाइए!' तब नारद ने कहा—'क्या खबरें सुनाऊँ? तुम्हारे किले में क्या हो रहा है; यह भी तुम्हें मालूम नहीं!' यह सुन कर कंस घबरा गया और पूछने लगा कि 'बताइए! बात क्या है?' तब नारद ने सारा रहस्य खोल दिया—'तुम तो जानते हो कि देवकी के आठवें गर्भ से योग-माया पैदा हुई? हाँ, तो सुनो! वह वास्तव में देवकी के गर्भ से नहीं; गोकुल में यशोदा के गर्भ से पैदा हुई थी। देवकी के वास्तव में कृष्ण नाम का एक लड़का पैदा हुआ था। उसके पैदा होते ही चोरी-छिपे उसे यशोदा के पास पहुँचा कर उसकी लड़की को यहाँ लाया गया। तुमने उसे मारने की कोशिश भी की। लेकिन वह बच गई। हाँ, तो अब कृष्ण और उसके भाई बलराम बृन्दावन में नन्द के घर पल रहे हैं। वे ही बड़े होकर तुम्हारा नाश करेंगे। खबरदार!' नारद की ये बातें सुनते ही कंस ने गुस्से से वसुदेव और देवकी को बुला कर उन्हें मारने का हुक्म दिया। लेकिन नारद के बहुत समझाने पर उसने उनकी जान बचा कर जेल में डालने का हुक्म दिया। बस, उस दिन से उसकी नींद हराम हो गई।

वर्ष 2 — अंक 10
जून — 1951

एक प्रति 0-6-0
वार्षिक 4-8-0

अच्छा लड़का

पानी बरसा रिमझिम रिमझिम
बिजली चमकी चमचम चमचम
बादल बरसे काले काले
सड़कों पर बह चले पनाले।

जूते भींगे, छाते भींगे
कपड़े-लत्ते सब कुछ भींगे
लोग चल रहे धीमे धीमे
अथवा गिर जाते जल्दी में।

उसी राह से बुढ़िया दुबली
एक काँपती जा रही चली।
पग पग पर डगमग हो रुक कर
लाठी लिए हाथ में, झुक कर।

सहसा निकट स्कूल में पल भर
घण्टी बाज उठी टन टन कर।
घर की ओर तीर से छूटे,
दौड़े लड़के छोटे छोटे।

बच्चे – बूढ़े सब नारी – नर
अपनी राह जा रहे चल कर।
वह बुढ़िया आफत की मारी
किससे माँगे मदद बिचारी ?

‘ बैरागी ’

हँस हँस कर देती करताली
खुशी भरी बच्चों की टोली।
बुढ़िया चली जा रही रुकती
पग पग पर, लाठी पर झुकती।

इतने में इक लड़के ने बस,
उस बुढ़िया को देखा बेबस।
करुणा कर धीरे उसका कर
घर पहुँचा आया उसके घर।

कहा लौट कर उसने अपने
दोस्तों से—‘दोस्तो! क्या तुमने
सोचा कभी कि यह बुढ़िया भी
किसी दूसरे की है जननी?

मैं भी दूर देश यदि जाऊँ
निज माँ की मदद न कर पाऊँ
तब उसके बुढ़िया होने पर
दे न सहारा दूसरा अगर?’

यह सुन कर लड़का शरमा कर
मन में चुप रह गया सोच कर—
‘नाहक है जिन्दगी उसी की
जो न कर सका मदद किसी की।’

उद्बोधन

ब्रजनन्दन सहाय 'मोहन'

बन्धुओ, हिल—मिल चलो सब
ले परस्पर का सहारा।
भव्य — भारत के चमन का
खिल उठे सौभाग्य सारा।

एक के प्रति दूसरे का
भाव हो शुचि और सुन्दर।
निज वतन के वासियों सब,
फूट मत डालें कहीं पर।

हर हृदय से ध्वनित हो फिर
एकता का एक नारा।
बन्धुओ, हिल—मिल चलो सब
ले परस्पर का सहारा।

प्रेम का हो वास हरदम
दूर कर कालिमा मन की।
स्नेह की सरिता बहा दें
भावना में क्रूर—जन की।

एक जननी के सपूतो,
एक सा हो प्रेम प्यारा।
बन्धुओ, हिल—मिल चलो सब
ले परस्पर का सहारा।

विघ्न जो आयें डगर पर
धूल में उनको मिला दें।
चिर — विजय की घोषणा से
अचल का आसन हिला दें।

अटल निश्चय हों सभी के
ज्यों गगन का अचल तारा।
बन्धुओ, हिल—मिल चलो सब
ले परस्पर का सहारा।

देश की बलि—वेदिका पर
प्राण की आहुति जला कर।
दें नया आलोक जग को
ज्योति फैले आज घर—घर।

आज जन — मन में जगा दें
चेतना की तीव्र धारा।
बन्धुओ, हिल—मिल चलो सब
ले परस्पर का सहारा।

हरिहर शास्त्री जी अनन्तपुर के एक वकील थे। वे बड़े कट्टर सनातनी थे। याने वेष-भूषा और आचार-व्यवहार में वे बड़ों की लकीर पीटते थे। देखिए न, वकालत में उन्होंने बहुत नाम और लाखों रुपए कमाए। पर अपने सिर पर चुटिया बनाए रखी। छुटपन में न जाने कब चुटिया रखी। फिर उन्होंने अनेकों के अनुरोध करने पर भी न कटाई। इस तरह धर्माचार का वे जिस कट्टरता से पालन करते, अपने घर-वालों से भी उसी कट्टरता से पालन करवाते थे। उनके बैजनाथ नाम का पन्द्रह बरस का एक लड़का था। वह बहुत चालाक और चलता-पुर्जा था। नवीं श्रेणी में पढ़ रहा था। क्लास में उसका हमेशा अव्वल नम्बर रहता था। इसलिए सभी उसकी प्रशंसा करते थे।

जमाना बदल जाने के कारण सब लड़कों ने अपनी अपनी चुटिया कटा कर बाल बढ़ा लिए थे। लेकिन बैजनाथ अपने पिता की तरह चुटिया का झण्डा ऊँचा किए था। उसके साफ मुंडे हुए, चिकने सिर पर छः अंगुल लम्बी, घनी चोटी शोभा देती थी। यह देख कर उसकी श्रेणी के लड़के सभी उसका खूब मजाक उड़ाया करते थे।

लेकिन बैजनाथ उनकी बातें अनसुनी कर जाता और कोई परवाह न करता। कोई दूसरा होता तो जरूर चिढ़ जाता और उनसे लड़ बैठता। लेकिन यह बैजनाथ के स्वभाव के प्रतिकूल था। सचमुच वह बड़ा सहन-शील लड़का था।

लेकिन एक दिन उसके सहपाठी रामनाथ ने जो उसके पड़ोस में रहने वाला था और उसका गहरा दोस्त भी था, 'जा बे! चुटिया वाले!' कह कर उसकी चुटकी ली। अगर यही बात किसी दूसरे के मुँह से निकली होती तो बैजनाथ उसकी कोई परवाह नहीं

मुहम्मद शफी

करता। लेकिन रामनाथ को ऐसा कहते सुन कर बैजनाथ को बड़ा दुख भी हुआ और क्रोध भी आया।

धीरे धीरे दोनों में झगड़ा हुआ। अन्त में बैजनाथ ने गुस्से में आकर अपनी पूरी ताकत से रामनाथ की नाक पर दो मुक्के जमा दिए और वहाँ से भाग गया।

'अच्छा! देखूँगा, तू कहाँ जाता है! इस बार जब मौका मिलेगा तो बच्चू! तेरी चुटिया उखाड़ लूँगा!' यह कह कर रामनाथ ने भी घर की राह पकड़ी।

इतने में छुट्टियाँ आ गईं। रामनाथ को अपने माँ-बाप के साथ रिश्तेदारों के गाँव जाना पड़ा। वे भोर को आने वाली प्यासिंजर में जाने की सोच कर तड़के ही स्टेशन पर जा पहुँचे।

गाड़ी आई और वे लोग चढ़ गए। माँ-बाप नीचे की बेंच पर सो गए और रामनाथ डिब्बे में सामान रखने के तख्त पर बिस्तर बिछा कर आराम से लेट गया। थोड़ी देर में उसे गाढ़ी नींद आ गई। नींद में ही रामनाथ उठ बैठा। उसने आँख खोले बिना ही नजदीक ही लटकती हुई रेल रोकने वाली जंजीर पकड़ कर खींच ली। तिस पर दाँत पीसते हुए कहने लगा—'बच्चू! अब देखता हूँ, तू कैसे बच कर जाएगा? आ गई न तेरी चुटिया मेरे हाथ!' उसके इस तरह जंजीर पकड़ कर खींचते ही तुरन्त रेल रुक गई।

रामनाथ की बातों और उसकी इस चेष्टा का रहस्य किसी की समझ में न आया। इतने में गार्ड, ड्राइवर और रेल की पुलिस के कुछ आदमी जल्दी जल्दी आकर उस डिब्बे में चढ़ गए। 'जंजीर किसने खींची है!' उन्होंने पूछा।

यह देख कर रामनाथ के माता-पिता बहुत घबराने लगे। इस गड़बड़ी में शायद

रामनाथ की नींद टूट गई। वह अभी तक जंजीर हाथ में ही पकड़े हुए था। 'पिताजी! यह कौन सा स्टेशन है?' उसने अपने पिता से पूछा।

रामनाथ का पिता बेचारा बिल्कुल न समझ पाया था कि उसके लड़के ने जंजीर क्यों खींची। 'बेटा! तुमने जंजीर क्यों खींची? तिस पर तुम नींद में क्या गुनगुना रहे थे? क्या तुम कोई बुरा सपना देख रहे थे?' उसने अपने बेटे से पूछा।

तब रामनाथ ने हड़बड़ा कर अपने हाथ की जंजीर देखी। अब तक वह उसे बैजनाथ की चुटिया ही समझ रहा था। अब उसे मालूम हुआ कि उसने जंजीर खींच कर रेल-गाड़ी रोक ली है। इतने में उसकी माँ ने उसे पुचकार कर पूछा कि बात क्या है?

तब रामनाथ ने अपने सपने की बात बताई। उसने कहा—'माँ! हमारे पड़ोस में हरिहर शास्त्री हैं न? उनके लड़के बैजनाथ से मेरा झगड़ा हो गया। मैंने उसे 'जा बे! चुटिया वाले!' कह कर चिढ़ाया। वह मुझे दो मुक्के मार कर भाग गया। सपने में फिर वह मुझे दिखाई दिया। यही नहीं, उसकी चुटिया भी मेरे हाथ लग गई। बस, मैंने इतने जोर से खींचा कि उखड़ कर मेरे हाथ आ जाए! ऐसा अच्छा मौका भला मैं हाथ से कैसे जाने देता?'

उसकी बात सुन कर मुसाफिर और गार्ड आदि भी हँसने लगे। इतने में एक आदमी ने उसका फोटो भी खींच लिया। यह देख कर रामनाथ के माँ-बाप और भी घबरा गए।

तब गार्ड ने उन्हें बताया—'आज समझ लीजिए कि हम सबकी तकदीर अच्छी है! अगर आपके लड़के ने जंजीर न खींच ली होती

तो रेल उलट जाती। क्योंकि थोड़ी दूर पर कुछ बदमाशों ने रेल की पटरी हटा दी थी। इस छोटे लड़के के सपना देखने के कारण हम सब की जान जोखिम से बच गई। एक तरह से यह सब भगवान की लीला है। भगवान की लीला बड़ी विचित्र है। देखिए न! मामूली तौर पर रेल के कानून के मुताबिक लड़के के यह जंजीर खींचने के कारण आपको पचास रुपए जुर्माना देना पड़ता। लेकिन आज उलटे रामनाथ के जंजीर खींचने के कारण एक सौ सोलह रुपए का ईनाम दिया जाएगा। इतना ही नहीं, इसका फोटो भी खींच कर सभी पत्रों को भेजा जाएगा।'

गार्ड की बातें सुन कर मुसाफिर सभी इतने खुश हो गए कि वे सभी रामनाथ को दुलारने लगे।

दूसरे दिन रामनाथ की कहानी उसके फोटो सहित सभी बड़े बड़े पत्रों में छप गई। छुट्टियाँ खतम होते ही रामनाथ पढ़ाई के लिए अपने गाँव लौट आया।

स्कूल के मास्टरों, लड़कों सभी ने उसे चारों ओर से घेर लिया। सभी उसकी किस्मत की तारीफ करने लगे।

इतने में बैजनाथ भी वहाँ आया। 'रामू! तुमको गुस्सा दिला कर, सपने में दर्शन देकर, तुमसे जंजीर खिंचवा कर इतना यश मिलने का मूल-कारण तो मेरी चुटिया है न! फिर तुमने मेरी चुटिया का फोटो न छपवा कर अपना फोटो क्यों छपवाया सभी पत्रों में!' हँसते हुए बैजनाथ ने पूछा।

उसकी बात सुन कर सभी हँसने लगे। फिर बैजनाथ और रामनाथ दोनों दोस्त हाथ मिलाए, खुशी खुशी खेलने चले।

कई हजार साल पहले श्रावस्ती नगर पर दानशील नाम का एक राजा राज करता था। आस-पास के सभी राजाओं में दानशील ही बड़ा था। उसके पास कई लाख की एक सेना थी। दास-दासियों की तो गिनती ही न थी। उस राजा का खज़ाना लालों, हीरों आदि अनेक बहुमूल्य मणियों और सोने-चाँदी के ढेरों से भरा हुआ था। उसकी सबसे बड़ी खुशनसीबी तो यह थी कि उसकी रानी कीर्तिरेखा बहुत ही सुन्दरी और सुशील थी।

इस तरह चारों ओर से ऐश्वर्य में लोटते रहने पर भी उसके मन में नाम को भी घमण्ड न था। वह गरीबों पर बहुत दया करता था। ईश्वर के प्रति उसके मन में बहुत भक्ति थी। दान-धर्म वह करता ही था। कोई भी उसके पास आकर खाली हाथ नहीं लौट जाता था। इसी से उस राजा का दानशील नाम सार्थक हुआ।

इस तरह कुछ दिन तक सुख से समय बिताने के बाद उस राजा के सिर पर अचानक एक आफ़त आ पड़ी। उसकी रानी कीर्तिरेखा जो हमेशा स्वस्थ रहती थी अचानक स्वर्ग सिधार गई। राजा के सिर पर तो मानो बिजली टूट पड़ी। प्रजा के दुख का भी कोई ठिकाना न था। लेकिन रोने से क्या फ़ायदा था? मरी हुई रानी को फिर कौन लौटा ला सकता था?

और कुछ दिन बीत गए। राजा और प्रजा दोनों धीरे धीरे मरी हुई रानी को भूल गए। अब उन सब के मन में एक ही चिंता थी। बात यह थी कि राजा के कोई

सन्तान न थी। रानी निस्सन्तान ही इंतकाल कर गई थी।

राजा के बाद राज दुश्मनों के हाथ में न पड़ जाए, इसके लिए यह जरूरी था कि राजा फिर विवाह कर ले। इसलिए मन्त्रियों और दरबारियों ने मिल कर राजा से प्रार्थना की कि वह दूसरा ब्याह कर ले।

राजा को उनकी बात माननी ही पड़ी। एक शुभ मुहूर्त में राजा ने फिर ब्याह कर लिया। लेकिन न जाने, उस राजा की नसीब कैसी बदल गई थी कि दूसरी रानी भी थोड़े ही दिन में स्वर्ग सिधार गई।

यह खबर उस राज के लोगों में फैल गई और धीरे धीरे उनके द्वारा आस-पास के राजों में भी फैल गई।

मंत्रियों और दरबारियों ने किसी तरह गिड़गिड़ा कर राजा को तीसरा ब्याह करने के लिए राजी किया। लेकिन इसमें एक मुश्किल थी। राजा से ब्याह करते ही रानियाँ एक एक कर मर जाती थीं। यह देखते देखते कौन पिता अपनी लड़की का गला इस तरह घोंटने को तैयार होता! राज-वंश वालों की बात तो दूर रही। मामूली घराने वाले भी राजा को लड़की देने को राजी न होते थे। लेकिन मंत्रियों ने और दरबारियों ने अपनी लगन न छोड़ी। वे देश के कोने कोने में लड़की की खोज करते ही रहे। यों बहुत दिनों तक खोजने के बाद आखिर उन्हें एक ऐसी गरीबिन मिली जो राजा को अपनी लड़की देने को तैयार हो गई। वह लड़की गरीब घराने में पैदा हुई थी; फिर भी सुन्दरता में किसी राजकुमारी से कम न थी। उस लड़की का सुन्दर रूप देख कर मंत्रियों और दरबारियों की खुशी का ठिकाना न रहा।

उन्होंने तुरन्त जाकर राजा को यह खबर सुनाई।

राजा को यह जान कर दुख नहीं हुआ कि वह एक गरीब घराने की लड़की से ब्याह करने जा रहा है।

उलटे उसे बहुत खुशी हुई। उसने मंत्रियों से कहा—'मौत गरीब और अमीर का फ़रक नहीं जानती। मैं इतने बड़े राज का स्वामी होकर भी अपनी रानियों को न बचा सका। जिसकी नसीब में जितने बरस तक जीना लिखा होता है वह उतने ही दिन जीता है। इसलिए मुझे उस गरीबिन की लड़की से ब्याह करने में ज़रा भी ऐतराज नहीं।'

यह सुन कर मन्त्री-गण बहुत खुश हुए। उन्होंने मुहूर्त निश्चय करके राजा के तीसरे ब्याह की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

लेकिन हरेक के मन में यह आशंका थी कि कहीं यह लड़की राजा से ब्याह होने के पहले ही न मर जाए। क्योंकि राजा की दो रानियाँ ब्याह होने के एक हफ्ते के अन्दर ही स्वर्ग सिधार गईं थीं।

पर इस बार ऐसा नहीं हुआ। धीरे-धीरे दिन, हफ्ते और महीने बिना किसी खटके के बीत गए। तब राजा, प्रजा और मंत्रियों के मन में जान आई।

उस दिन से उस राज के सब लोग मन ही मन भगवान से सिर्फ एक ही प्रार्थना करने लगे कि 'भगवान! कम से कम इस तीसरी रानी के गर्भ से हमारे राजा को सन्तान दो!'

शायद भगवान ने उनकी प्रार्थना सुन ली। क्योंकि दो महीने के अन्दर राज के सब लोगों को मालूम हो गया कि रानी के गर्भ रह गया है। अब लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा। राजा और उसके दरबारियों का तो कहना क्या था! खैर!

नवों महीने बीतने के बाद एक शुभ मुहूर्त में रानी पद्मा के एक ही साथ तीन सन्तान पैदा हुईं। सब लोग बड़ी आशा लगाए बैठे थे कि राजा के पराक्रमी लड़का पैदा होगा। लेकिन तीनों लड़कियाँ ही थीं। कुछ लोगों को निराशा हुई!

लेकिन राजा के मन में कोई सोच न था। उसने सोचा—'क्या हर्ज है! मैं इन्हीं को लड़के मान लूंगा।' उन तीनों लड़कियों को राजा और रानी बड़े प्रेम से पालने पोसने लगे।

माँ-बाप ने लड़कियों के नाम क्रम से सुहासिनी, सुभाषिणी और सुकेशिनी रखे। लड़कियाँ ज्यों ज्यों बड़ी होने लगीं त्यों-त्यों उनकी सुन्दरता और भी खिलने लगी। उन्हें देख कर हरेक कहने लगा—'राजा की एक एक लड़की दस दस राजकुमारों के बराबर है।'

इस तरह आनन्द से दिन बीतते रहने पर भी राजा और रानी के लिए बीच

बीच में खटका पैदा हो जाया करता था। क्योंकि राजा की तीनों लड़कियों में से कोई न कोई हमेशा खतरे में पड़ जाया करतीं। लेकिन हर बार जान बच जाती।

एक बार सुहासिनी अपने पिता के साथ बाग में टहल रही थी कि एक बड़ा साँप उसे काटने दौड़ा। ऐन मौके पर राजा ने तलवार खींच कर उस साँप के दो टुकड़े कर दिए। नहीं तो सुहासिनी की खैर न थी। दूसरी बार सुभाषिणी अपनी माँ के साथ नदी किनारे टहलने गई। अचानक नदी किसी जादू से उमड़ पड़ी और सुभाषिणी को पानी में बहा ले गई। एक धीवर ने जो वहाँ मछलियाँ पकड़ रहा था, रानी का चिल्लाना सुना और तुरंत पानी में कूद कर किसी न किसी तरह सुभाषिणी की जान बचाई। अगर उस दिन समय पर धीवर वहाँ न होता तो सुभाषिणी को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता।

इसी तरह और एक बार तीसरी लड़की सुकेशिनी भी संकट में फँस गई। बात यों हुई कि एक दिन तीनों लड़कियाँ बाग में

फूल तोड़ने गईं। तीनों तीन टोकरियों में फूल भर कर महल को लौटने लगीं। सब से आगे सुभाषिणी चल रही थी और उसके पीछे सुहासिनी। सुकेशिनी सबसे पीछे चल रही थी। अचानक सुकेशिनी जोर से चीख कर बेहोश हो गई।

तुरन्त दोनों बहनें सहमी हुई महल में दौड़ी गईं और माँ से जाकर यह खबर सुनाई। माँ उनको साथ लेकर दौड़ी हुई बाग में सुकेशिनी के पास आई तो उसने देखा कि सुकेशिनी बेहोश पड़ी है। उसके चारों ओर टोकरी के फूल छितरे हुए हैं और उन फूलों के बीच में एक बिच्छू रेंग रहा है। तब रानी को मालूम हुआ कि उस बिच्छू के डंक मारने के कारण ही सुकेशिनी बेहोश हो गई है। उसने तुरंत बिच्छू को मार डाला और सुकेशिनी को उठा कर महल में ले आई। वैद्यजी को खबर भेजी गई और उन्होंने आकर तुरंत दवा की। थोड़ी देर बाद सुकेशिनी को होश आया और वह फिर बोलने-चालने लगी।

इस तरह अपनी प्राण-प्यारी लड़कियों में से किसी न किसी की जान हर दम खतरे में देख कर राजा बेचैन हो उठा।

आखिर एक रोज उसने एक ज्योतिषीजी को बुला कर अपनी तीनों लड़कियों के जन्म-चक्र दिखलाए।

ज्योतिषी जब मन ही मन लम्बा-चौड़ा हिसाब लगाते हुए बहुत देर तक चुप हो रहा तो राजा के मन की घबराहट और भी बढ़ गई।

'आप हिचकिचाइए नहीं! जो बात हो साफ साफ कह दीजिए। मैंने तो सच्ची बात जानने के लिए ही आपको बुलवाया

है।' उसने उदास होकर उन ज्योतिषी जी से कहा।

तब ज्योतिषी ने यों बताया—'आपकी लड़कियाँ आगे चल कर बहुत सुन्दरी होंगी। उनकी सुंदरता की प्रशंसा सारे संसार में फैल जाएगी। लेकिन दुख की बात यह है कि उनका अलौकिक सौंदर्य ही उनका शत्रु बन गया है। जन्म से ही हमेशा इन पर कोई न कोई संकट आते ही........' यह कहते कहते वह कुछ सोच कर थोड़ी देर तक चुप हो रहा।

ज्योतिषी की एक एक बात राजा के दिल को टुकड़े टुकड़े कर रही थी। उसकी आँखों से आँसुओं की धार बह चली थी। यह देख कर ही ज्योतिषी और कुछ कहने का साहस न कर सका था। लेकिन थोड़ी देर में राजा ने अपने आँसू पोंछ कर ज्योतिषी जी से उनकी बात पूरी करने का अनुरोध किया। 'आप हिचकिचाइए नहीं! मुझे सच्ची बात बता दीजिए!' उसने कहा।

'मुझे बड़ा अफसोस है कि मैं नाहक आपके मन को दुख दे रहा हूँ।' ज्योतिषी ने कहा।

'आप फ़िक्र न कीजिए। सच्ची बात जानने से मुझे अपनी प्यारी लड़कियों की रक्षा में सुविधा होगी। इसलिए आप कुछ भी चिन्ता न कीजिए।' राजा ने कहा।

तब ज्योतिषी ने फिर कहना शुरू किया—'सात बरस पूरे होने तक राजकुमारियों की जान हमेशा खतरे में रहेगी। हमेशा उन पर कोई न कोई संकट आते ही रहेंगे। लेकिन सात बरस बाद ये सब संकट पार करने पर फिर कोई खतरा न रहेगा। इसलिए सात बरस

की अवधि पूरी होने तक जी-जान से इन लड़कियों की देख-भाल करनी होगी। इसके अलावा जन्म-पत्री में और कोई विशेषता नहीं है।' ज्योतिषी ने अपनी बात पूरी की।

राजा ने ज्योतिषी का बहुत सत्कार करके अनेकों ईनाम देकर उन्हें भेज दिया। फिर उसने रानी के पास आकर बड़े दुख के साथ ज्योतिषी की बातें सुनाईं। सुनते ही रानी मूर्छित हो गई। आखिर दासियों के बहुत सेवा करने पर रानी को होश आया। राजा उसे धीरज बँधा ही रहा था कि इतने में कुछ लौंडियों ने दौड़ते हुए आकर खबर दी—'हुजूर! तीनों राजकुमारियाँ बाग में बेहोश हो गई हैं।'

तुरन्त चारों ओर चीख-पुकार मच गई। रानी घबरा कर बाग की ओर दौड़ी। दासियाँ भी उसके साथ दौड़ीं। राजा ने पहले वैद्य जी को खबर भेज दी और खुद भी बाग की ओर दौड़ पड़ा।

[तीनों लड़कियों के बेहोश हो जाने का क्या कारण था? उसके बाद क्या हुआ? आदि बातें अगले महीने पढ़ कर आनन्द उठाइए।]

किसी जङ्गल में एक मुनि तप करता रहता था। उनका नाम किसी को मालूम न था। लेकिन सब लोग जानते थे कि वह हमेशा सच ही बोला करता है। इसलिए उसके स्वभाव के अनुसार उसका सत्यकेतु नाम पड़ गया और धीरे धीरे उसका यह नाम चारों ओर प्रसिद्ध हो गया।

सत्यकेतु कभी झूठ बोलता ही न था। इसके अलावा वह संसार के किसी भी जीव को कष्ट देना न जानता था। पेड़ों के फल तोड़ने से पेड़ों को कष्ट होगा, यह सोच कर वह एक कर जमीन पर गिरे-पड़े फल ही खाता था। बछड़ों को दूध से वञ्चित करना नहीं चाहता था। इसलिए वह झरनों का स्वच्छ जल ही पीकर दिन बिताता था। सत्यकेतु के प्राणों में अहिंसा आ बसी थी।

एक दिन सत्यकेतु अपने आश्रम में कुशासन पर बैठा माला लेकर जप रहा था कि इतने में एक जङ्गली सूअर दौड़ता आया और नजदीक की एक झाड़ी में घुस गया। उस सूअर का सारा बदन लहू-लुहान हो रहा था।

सत्यकेतु ने निश्चय कर लिया कि जरूर किसी न किसी शिकारी ने उसे अपने तीर का निशाना बनाया।

उसने सोचा—'बेचारा यह जीव एक ही चोट से लहू-लुहान होकर सहमा हुआ जान बचाने के लिए भाग आया। वह व्याध तो जरूर इसका पीछा करता होगा! अब कैसे इसकी जान बचाई जाए?' यह सोच कर सत्यकेतु उसकी जान बचाने के उपाय सोचने लगा।

इतने में एक शिकारी वहाँ आ धमका। उसका सारा बदन कोयले की तरह काला-कलूटा था। उसकी आँखें अङ्गारों की तरह जल रही थीं। झाड़ी-सी उगीं उसकी मूंछें

स्नेहलता देवी

देखते ही डर लगता था। उस लम्बे डील-डौल वाले शिकारी ने बड़ी विनय से मुनि को नमस्कार किया और कहा—'मुनि महाराज! क्या इधर से कोई घायल सूअर आया है? आपने उसे देखा हो तो दया कर बता दीजिए।'

जब मुनि कुछ नहीं बोले तब उस व्याध ने विषाद के साथ कहा—'महाराज! न जाने आज किसका मुँह देख कर उठा था कि सारा जङ्गल छान डाला; पर कहीं कोई शिकार न मिला। आखिर हताश होकर लौट ही आ रहा था कि एक जङ्गली सूअर सामने आया। मैंने उस पर तीर छोड़ा। पर निशाना ठीक न बैठा और वह घायल जानवर धुँ-धुँ करता इधर ही भागा। मैं इसे मार कर शहर में इसका माँस बेचता और अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट भरता। लेकिन अब तो हमें भूखों ही रहना पड़ेगा! सच कहता हूँ मुनिजी! तीन दिन से घर में चूल्हा नहीं जला है। अगर आज यह सूअर भी हाथ न लगा तो हम सबको भूखों मरना होगा।' इस तरह वह व्याध बड़े दीन-स्वर से अपनी राम-कहानी सुनाने लगा।

अब तक तो सत्यकेतु का मन सूअर पर ही पिघल रहा था। लेकिन व्याध की कहानी सुन कर वह व्याकुल हो गया। अब वह क्या करे! व्याध की कहानी से मालूम होता था कि उस व्याध के सारे परिवार का जीवन इस सूअर पर निर्भर है। अगर मुनि-महाराज सूअर का पता बता देते हैं तो उन्हें जीव-हत्या का पाप लगता है। इसके अलावा अगर वह कह दे कि उसने सूअर को नहीं देखा है तो उसे झूठ बोलना पड़ता है और वह जानता था कि—'नहिं असत्य-सम पातक-पुंजा।'

दोनों तरफ उसे पाप खड़ा दीखता था। इस तरह 'भइ गति साँप-छुछूंदर केरी।' वाली हालत उस मुनिजी की हो गई।

बहुत सोच-विचार के बाद मुनि ने निश्चय किया कि चाहे जो हो सूअर की जान बचानी ही चाहिए। पेट भरने के लिए तो व्याध और भी कोई उपाय ढूंढ़ सकता है।

यों थोड़ी देर सोच कर उसने कहा—'ऐ व्याध! मैंने तुम्हारी बातें सुनीं। तुम पूछते हो कि मैंने सूअर को इधर जाते देखा कि नहीं! लेकिन मैं कुछ कहने में असमर्थ हूँ। क्योंकि देखने का काम है आँखों का। लेकिन वे बोलती नहीं हैं। बोलता है मुँह। लेकिन बेचारे मुँह ने तो कुछ देखा नहीं! इसलिए वह ठीक-ठीक क्या कह सकता है!' मुनि ने बड़ी चालाकी से जवाब दिया।

व्याध भौंचक सा रह गया। अब वह क्या जवाब दे! कुछ नहीं सूझता था। लेकिन यह क्या!

सत्यकेतु को इस तरह चालाकी से बोलते देख कर शिकारी उनकी मंशा समझ गया और अन्दर-ही-अन्दर बहुत खुश हुआ।

उसके चेहरे पर मुसकान की हल्की रेखा खेलने लगी।

देखते-देखते उस व्याध के काले शरीर का रङ्ग बदल कर चाँदनी की तरह सफेद हो गया। उसके हाथ का धनुष त्रिशूल बन गया। उसके बिखरे बाल जटा-जूट बन गए। माथे पर बालचन्द्र चमकने लगा।

'अरे! मैं यह क्या देखता हूँ! साक्षात् भगवान शिवजी ने मुझे इस रूप में दर्शन दिया! ओह! मैं कैसा भाग्यवान हूँ!' यह सोच कर सत्यकेतु बार-बार महादेव के चरणों में लोटने लगा।

महादेव ने कहा—'हे सत्यकेतु! तुम्हारे अहिंसा और सत्य के बीच एक उलझन खड़ी करके मैंने तुम्हारी परीक्षा ली है। लेकिन तुमने चतुराई से सच बोल कर भी सूअर की जान बचा ली। तुम प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए।'

'देवाधिदेव! सब आपकी कृपा है!' सत्यकेतु ने सिर झुका कर कहा।

शिवजी ने हँसते हुए कहा—'हे सत्यकेतु! तुमने आँखों से देख कर भी मुँह से जिसका पता न बताया, जानते हो वह सूअर कौन है? उधर देखो!'

इतना कहते ही झाड़ी में से पार्वती जी मुस्कुराती निकलीं और आकर शिवजी की बगल में खड़ी हो गईं। सत्यकेतु ने आनन्दित होकर अनेक तरह से उनकी स्तुति की।

स्तुति से प्रसन्न होकर गौरीशङ्कर ने कहा—'हे सत्यकेतु! तुम्हारी सत्यवादिता देख कर हम दोनों तुम पर बहुत प्रसन्न हैं। तुम जो चाहो, वर माँगो।'

तब सत्यकेतु ने कहा—'भगवान! मुझे आप के दर्शन तो मिल गए। इससे बढ़ कर मुझे और क्या चाहिए? लेकिन जब आप वर माँगने की आज्ञा दे रहे हैं तो मैं इन्कार भी नहीं कर सकता। इसलिए ऐसा वर दीजिए जिससे मैं आगे भी सत्य और अहिंसा का पालन करता रहूँ। बस, मुझे यही वर दीजिए! मुझे कुछ नहीं चाहिए!' उसने कहा।

उसकी बात सुन कर भगवान ने आनन्द से कहा—'तथास्तु।' इतने में आकाश से एक विमान नीचे उतरा और शिव-पार्वती उस पर चढ़ कर अपने लोक चले गए।

ज्योतिषी की मौत

कहा जाता है कि किसी समय रणवीर नाम का एक राजा रहता था। वह बड़ा ज़ालिम और क्रोधी था। अगर किसी पर उसे गुस्सा आता तो उसे तुरंत मरण-दण्ड दे देता। इस तरह अनेकों निर्दोषी उसके हाथों मृत्यु को प्राप्त हुए।

उस रणवीर के दरबार में समयज्ञ नाम का एक ज्योतिषी रहता था। रणवीर का उस ज्योतिषी की बातों पर बड़ा विश्वास था। वह उसकी सलाह लिए बिना कोई काम न करता था। इसलिए उसे बड़ी सावधानी से राजा की बातों का जवाब देना पड़ता था। क्योंकि उसे मालूम था कि राजा को उस पर गुस्सा आ गया तो फिर उसकी जान की ख़ैर नहीं।

एक बार रणवीर को पड़ोसी राजा शूरसेन को मार डालने की इच्छा हुई। इसलिए उसने समयज्ञ को बुला कर पूछा—'मेरे मन में एक इच्छा है। वह पूरी होगी कि नहीं?'

तब समयज्ञ ने बिना-सोचे विचारे कह दिया कि ज़रूर पूरी होगी। अब तक समयज्ञ ने रणवीर को जो जो बातें बताई थीं सब सच्ची उतरी थीं। इसलिए रणवीर ने जब सोचा कि शूरसेन को मारने के लिए उसने जो तरकीब सोची थी वह सफल होगी। इसलिए उसने शूरसेन को अपने राज में बुला कर उसकी बहुत ख़ातिर की। बस, ऐसा ज़ाहिर किया कि शूरसेन के प्रति उसके मन में बहुत प्रेम है। इस तरह धोखे में डाल कर उसको क़ैद करना चाहता था रणवीर!

लेकिन शूरसेन के साथ उसका मन्त्री भी आया था। वह बहुत चतुर था। बात की बात में दूसरों की नीयत भाँप लेता था। उसका नाम दूरदर्शी था। वह जानता था कि रणवीर बड़ा धोखे-बाज़ है। इसलिए वह

प्रमोद कुमार

उसके जाल में क्यों आता! क्या वह इतना भी नहीं जान सकता कि उसके मालिक को धोखा देने के लिए रणवीर बनावटी प्रेम दिखा रहा है?

इसलिए उसने सोच-विचार कर सही बात जान ली और चुपचाप अपने राजा की रक्षा का प्रबन्ध कर लिया।

एक दिन रणवीर टहलने के लिए शूरसेन को नगर से बाहर दूर ले गया। बात की बात में उसने एक इशारा किया जिससे नजदीक में छिपे हुए उसके सैनिकों ने आकर शूरसेन को चारों ओर से घेर लिया और कैद कर लिया।

लेकिन मन्त्री दूरदर्शी छाया की तरह अपने मालिक के पीछे ही लगा हुआ था। वह अपने आदमियों के साथ वहाँ आया और लड़ कर अपने राजा को छुड़ा लिया। इतना ही नहीं; उसने रणवीर को कैद भी कर लिया।

आखिर जब रणवीर ने देखा कि उसकी चाल बेकार गई तो फिर हाथ जोड़ कर अपनी रिहाई के लिए गिड़गिड़ाने लगा।

आखिर दूरदर्शी को उस पर दया आई। उसने उससे वचन ले लिया कि वह फिर कभी वैसी हरकतें न करेगा और उसे छोड़ दिया।

इस तरह अपनी चाल बेकार जाते और उल्टे अपना ही अपमान होते देख कर राजा रणवीर को अपने ज्योतिषी समरज्ञ पर बड़ा क्रोध आया। उसने क्यों कहा था कि 'तुम्हारी इच्छा पूरी होगी!' उसने तुरन्त ज्योतिषी की खबर लेने का निश्चय कर लिया। रातों-रात उसने ज्योतिषी को महल में बुला भेजा।

उसके सैनिकों ने जब जाकर कहा कि राजा बुलाते हैं तो ज्योतिषी ने सारी बात ताड़ ली। उसने सिपाहियों से पूछा—'भाइयो! क्या राजा साहब बहुत गुस्से में हैं?'

तब सिपाहियों ने कह दिया कि राजा साहब बहुत गुस्से में हैं और मुट्ठियाँ बाँध कर कमरे में बड़ी देर से टहल रहे हैं।

तब समयज्ञ ने अपने मन में सोचा— 'राजाओं के दरबार में नौकरी करना बहुत मुश्किल है। क्योंकि कोई नहीं कह सकता कि राजा का चित्त कब किस तरह बदल जाएगा! तिस पर रणवीर जैसे जालिम और क्रोधी राजा के दरबार में नौकरी करना क्या है, साक्षात् नरक है! किसी तरह भगवान की कृपा से आज तक मैंने अपनी जान बचाए रखी। लेकिन आज मेरी कहानी खतम। मेरी किस्मत में यही लिखा था। इसीलिए मैंने राजा की बात का वैसा जवाब दिया। खैर, अगर भगवान की यही इच्छा है तो मैं क्या कर सकता हूँ! मेरे किए क्या हो सकता है! लेकिन ऐसे समय धीरज खो बैठने से कोई फायदा नहीं। इसलिए मुझे साहस करके अपने होश-हवास दुरुस्त रखने होंगे। तभी मैं अपनी जान बचा सकूँगा। जाना तो पड़ेगा ही! देखूँगा कि भगवान की दया से बचने की कोई सूरत नज़र आती है या नहीं!' यह सोच कर वह सिपाहियों के साथ किले की ओर चला।

राजा ने अपनी आदत के मुताबिक मन का क्रोध मन में ही छिपा कर ज्योतिषी की बड़ी आव-भगत की और बड़े प्रेम से बातें करना शुरू किया। लेकिन समयज्ञ अच्छी तरह जानता था कि वह इतनी आव-भगत क्यों कर रहा है! उसे मालूम था कि निकट ही कहीं सिपाहियों की नङ्गी तलवारें उसका खून पीने के लिए उतावली हो रही हैं। लेकिन वह डरा नहीं। थोड़ी देर तक बातें करने के बाद राजा ने मधुर-स्वर में पूछा—'ज्योतिषी जी! आपने अनेकों के हाथ देख कर उनके भविष्य की बातें बताईं। लेकिन क्या आपने कभी अपने भविष्य की बातें जानीं?'

'क्यों नहीं जानता हुजूर! मैं अपना भविष्य अच्छी तरह जानता हूँ।' ज्योतिषी ने निडर होकर जवाब दिया।

'तो आपकी मृत्यु कब होगी?' राजा ने फिर पूछा। वह सोच रहा था कि ज्योतिषी कहेगा पन्द्रह या बीस साल बाद। तब वह तलवार निकाल कर उसकी गरदन पर धर देगा और पूछेगा—'क्या मैं तुम्हारी बात झूठी कर दूँ? तुम अपना भविष्य आप ही नहीं जानते हो। फिर चले हो दूसरों का भविष्य बताने?' उसके यह सवाल पूछने का यही मतलब था।

लेकिन ज्योतिषी क्या निरा भोंदू था? उसने पाँच मिनट तक गहरा ध्यान लगा कर जवाब दिया—'राजा! ज्योतिषियों पर पार्वती का एक शाप है। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि उनकी वाणी हमेशा सच्ची होती है।

'अपने बारे में तो यह बात और भी सच्ची है। लेकिन मेरी मौत के बारे में एक रहस्य है। यह रहस्य मैंने किसी को नहीं बताया। यहाँ तक कि अपनी पत्नी को भी नहीं। लेकिन हुजूर ने मेरी कुशल के लिए यह सवाल किया! इसलिए मैं टाल भी नहीं सकता। सुनिए—आपके जन्म-चक्र से साबित होता है कि मेरे मरने के दस घड़ी बाद आपकी मौत होगी। इसलिए मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि आपकी मौत से दस घड़ी पहले मेरी मौत होगी।'

यह सुनते ही रणवीर के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उसने सिपाहियों को वहाँ से हट जाने का इशारा किया। फिर उसने चार सिपाहियों को साथ देकर बड़ी हिफाजत से ज्योतिषीको घर भेज दिया। उस दिन से रणवीर ज्योतिषी की और भी खातिर करने लगा और प्राण-पणसे उसकी रक्षा करने लगा।

मन को भाने वाली बात

लोग कहते हैं कि उज्जैन में शेषगुप्त नामक एक व्यापारी रहता था। उसने तमाखू का व्यापार करके बहुत सा रुपया कमाया।

एक दिन उसके मित्र अङ्गवीर नाम के एक क्षत्रिय ने आकर उससे कहा—'मित्र! तुमने बीस मकान बनवाए। तीस लाख रुपया कमाया। जायदाद तो है ही। अब बोलो और कितना कमाना चाहते हो? रुपए से तुम्हारा मन कब भरेगा? क्या लोभ का कहीं अन्त भी है? कितने दिन इस तरह संसार के झञ्झटों में फँसे रहोगे? अरे, कुछ परलोक की भी तो फिक्र करो! आओ, चलो! हम दोनों जाकर दक्षिण के तीर्थों की यात्रा कर आयें। इससे पुण्य तो मिलेगा ही! साथ ही देश-भ्रमण भी होगा!'

यह बात सेठ को पसन्द पड़ गई। उसने तुरन्त अपने मित्र की बात मान ली। उसने दूसरे ही दिन अपने लड़कों को बुला कर कहा—'बच्चो! यहाँ तक मुझसे जो हो सका मैंने तुम लोगों के लिए कमा कर दिया। पर अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। इसलिए, तीर्थ करके पुण्य कमाना चाहता हूँ। इसलिए अब घर-द्वार और कारोबार का सारा भार तुम्हीं को उठाना होगा।' यह कह कर उसने अपने कारोबार और ज़मीन-जायदाद की सारी बातें उन्हें समझा दीं। फिर सेठ जी निश्चिंत होकर तीर्थ करने चले।

सबसे पहले वे दोनों मदुरा गए। वहाँ उन्होंने मन्दिर में भगवान की पूजा की। पूजा करने के बाद सेठजी ने अपने मित्र से पूछा—'भाई अङ्गवीर! ज़रा देखो तो! भगवान क्यो

एक हाथ ऊपर की ओर और दूसरा नीचे की ओर दिखा रहे हैं!'

जङ्गवीर को न सूझा कि वह इस सवाल का क्या जवाब दे। लेकिन वह सच कह भी नहीं सकता था कि मैं नहीं जानता। इसलिए उसने कहा—'मित्र! हमें भक्ति के साथ भगवान की पूजा करनी चाहिए। इस तरह की शङ्काएँ उनके बारे में मन में भी नहीं लानी चाहिए। मैं तुम्हारे इस सवाल का जवाब पीछे दूँगा।' यह कह कर उसने किसी तरह अपना पिण्ड छुड़ाया।

वहाँ से उन दोनों ने काँची जाकर भगवान वरदराज के दर्शन किए। वहाँ भी सेठ के मन में एक शङ्का हुई। उसने पूछा—'मित्र! मदुरा के भगवान एक हाथ ऊपर और एक हाथ नीचे किए खड़े थे। लेकिन ये भगवान क्यों दोनों हाथ पसारे खड़े हैं जैसे वे अंजलि बाँधना चाहते हैं!'

जङ्गवीर इस सवाल का जवाब भी न दे सका। इसलिए उसने कहा—'भाई! मैंने पहले ही कह दिया था कि हमें इस तरह की शङ्काएँ नहीं करनी चाहिए। अगर तुम्हारा

मन इसी तरह सन्देह में पड़ा रहेगा तो फिर तीर्थ जाने से क्या लाभ! तुम जल्दी न करो। मैं कभी ये सारी बातें तुम्हें समझा दूँगा।'

मित्र की बातें सुन कर सेठ ने चुप्पी साध ली। उसने बहुत दिनों तक फिर इस तरह के सवाल न किए।

आखिर वे दोनों घूमते-घामते भद्राचलम आ पहुँचे। वहाँ फिर सेठजी के दिमाग में खलबली पैदा हुई। उसने अपने मित्र से पूछा—'भाई! पिछली बातें जाने दो। कम से कम यह तो बताओ कि यहाँ के हनुमान जी हाथ जोड़े क्यों खड़े हैं?'

तब उसके मित्र ने झल्ला कर कहा—'कहीं तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया है कि हरदम इस तरह की बेसिर-पैर की बातें करते रहते हो! क्या हम घर छोड़ कर इतनी दूर यही सब सोचने आए हैं!'

बेचारा सेठ चुप रह गया। दोनों श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन करने गए। जड्डवीर आँखें मूँद कर उच्च स्वर से प्रार्थना करने लगा। परन्तु सेठ आँखें फाड़ फाड़ कर

भगवान के हाथों को देखता रहा। जैसे ही मित्र की स्तुति समाप्त हुई, सेठ पास आ गया और पूछने लगा—'भई! एक सवाल का तो जवाब देना ही पड़ेगा। श्रीरामचन्द्र जी दाहिने हाथ की चुटकी लगाए क्यों खड़े हैं! इस सवाल का जवाब दिए बिना तुम मुझसे पिण्ड नहीं छुड़ा सकते!' उसने ज़िद की।

लेकिन आखिर जब उसका मित्र उसके सवाल का जवाब नहीं दे सका तो सेठ को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा—'तुमने इस तीर्थ-यात्रा में नाहक मेरा इतना रुपया खर्च करवाया। तुमने कहा कि यात्रा करने से ज्ञान बढ़ता है और मन के सन्देह दूर हो जाते हैं। लेकिन इतनी जगहें घुमा कर भी मेरा एक भी सन्देह दूर न किया। तुमने मुझे धोखा दिया। इसलिए मैं न अब तुम्हारी दोस्ती चाहता हूँ और न यह यात्रा। मैं यहीं से घर लौट जाता हूँ।' यह कह कर सेठ अपने मित्र को कोसते हुए वहीं से अकेला घर लौट गया।

* * *

शोभगुप्त घर तो लौट आया। लेकिन उसके मन में शङ्काएँ बनी ही रहीं। वह दिन रात इसी उधेड़-बुन में लगा रहा। यहाँ तक कि इस चिन्ता में उसका खाना-पीना भी छूट गया। आखिर उसने सोचा—'चाहे जितना खर्च करना पड़े, शङ्काओं का समाधान तो कराना ही होगा। नहीं तो मुझे चैन न मिलेगा।' यह निश्चय करके उसने शहर में चारों ओर ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो उसके मन की शङ्काएँ दूर करेगा उसे वह मुँह-माँगा इनाम देगा।

सेठ का ढिंढोरा सुन कर उस शहर के ही नहीं, आस-पास के बड़े पण्डित लोग भी लालायित हो उठे।

आखिर सेठ ने अपने घर में पण्डितों की बड़ी सभा की और उनसे अपनी शङ्काएँ कह सुनाईं। पंडितों ने उठ कर एक-एक करके सभी शङ्काएँ दूर करने के लिए तरह तरह के जवाब दिए। उन्होंने अनेकों शास्त्रों से उदाहरण देकर अपनी बातें साबित कीं।

लेकिन सेठ को किसी की बातों से सन्तोष न हुआ।

इतने में उन लोगों में से खुआ नामक एक किसान ने उठ कर कहा—'वाह! क्या इन्हीं छोटी सी बातों का जवाब देने के लिए इतने पण्डित लोग दिमाग लड़ा रहे हैं! क्या कोई सेठजी के मन की शङ्काएँ दूर नहीं कर सका! अच्छा, लीजिए! मैं उनके सवालों का जवाब देता हूँ!' यह कह कर जब वह आगे बढ़ा तो पण्डित सभी हक्के-बक्के से रह गए। तब उस किसान ने सेठजी के सामने आकर कहना शुरू किया—'सेठजी! क्या आप इतने तजुर्बेकार होकर भी ये छोटी सी बातें न जान सके! सुनिए, मदुरा के भगवान जो एक हाथ नीचे और दूसरा हाथ ऊपर किए हुए था उसका मतलब यह था—'देखो, यहाँ की जमीन कितनी उपजाऊ है! यहाँ तमाखू की पत्ती एक गज लम्बी होती है।' वे यही सबको बताना चाहते थे।'

यह सुनते ही सेठ के मुँह पर एक मुसकान दौड़ गई जैसे कि उन्हें सवाल का ठीक जवाब मिल गया हो।

खुआ ने फिर कहना शुरू किया—'काँची के भगवान वरदराज हाथ पसार कर यह दिखाना चाहते थे कि 'इस जमीन पर उगी हुई तमाखू की पत्ती इतनी चौड़ी होती है।'

यह सुन कर तो सेठ की खुशी का ठिकाना न रहा। 'तो फिर भद्राचल के

हनुमान हाथ जोड़े क्यों खड़े थे?' उसने बनाबली से पूछा।

तब रघुआ ने कहा—'हनुमानजी यह कहना चाहते थे कि 'क्यों! देखो, इतनी लम्बी और इतनी चौड़ी पत्तियों वाले तमाखू के पौधे की जड़ इतनी मोटी होती है।'

यह सुन कर सेठ के अचरज का ठिकाना न रहा। उसने कहा—'रघुआ! तुम्हारी सारी बातें मुझे पसन्द आईं। लेकिन श्रीरामचन्द्र के बारे में तो तुमने बताया नहीं! वे दाहिने हाथ से चुटकी बाँधे क्यों खड़े थे?'

'सेठजी! अब भी उसका माने आपकी समझ में न आया? लीजिए, कहता हूं, मर्यादा-पुरुषोत्तम रामजी चुटकी बाँधे संसार में यह विदित करना चाहते थे कि उस श्रेष्ठ तमाखू से तैयार की हुई सुँघनी एक चुटकी भर नाक में खींचने से आदमी को कैलास-वास का आनन्द मिलता है।'

यह सुनते ही सेठ ने उठ कर रघुआ को गले से लगा लिया और प्रशंसा करते हुए कहा—'अरे रघुआ! मैंने बड़ी भूल की जो इतने पण्डितों को कष्ट दिया। मुझे क्या मालूम था कि तुम मेरे सब सवालों का जवाब दे सकते हो? आज मेरी सारी शङ्काएँ दूर हो गईं और मुझे यात्रा करने का फल मिल गया।' यह कह कर उसने रघुआ को मुँह-माँगा ईनाम दिया।

'सेठ के एक भी सवाल का जवाब हम लोग न दे सके! फिर हमारी पण्डिताई किस काम की?' यह सोच कर अफसोस करते हुए पंडित लोग मुँह लटकाए अपने-अपने घर लौट गए।

पुराने जमाने की बात है। राजस्थान में रायसिंह नाम का एक राजपूत रहता था। उसके एक ही लड़का था जिसका नाम मानसिंह था। वह रायसिंह का लड़का था, इसलिए छुटपन से ही लोग उसे रायजी मानसिंह कह कर पुकारा करते थे। इस रायजी मानसिंह को दान-धर्म करने से बड़ा प्रेम था। उसके मुँह से कभी 'नहीं' न निकलता था। यहाँ तक कि लोगों में यह बात चल पड़ी थी कि मानसिंह ने छुटपन में पढ़ते समय भी ये दोनों अक्षर अपने हाथों न लिखे।

बचपन से ही उदार होने के कारण बड़े होने के बाद भी मानसिंह खूब दान-धरम करने लगा। कुछ दिन बाद जब वह अपनी जमीन-जायदाद का मालिक हो गया तब तो कहना ही क्या! पुराण युग में बलि और कर्ण ने दान करने में जैसा नाम पाया वैसा ही नाम कलियुग में मानसिंह ने पाया।

सारे देश में यह बात प्रसिद्ध हो गई कि रायजी मानसिंह से बढ़ कर दुनियाँ में कोई दानी नहीं है। रायजी मानसिंह इस तरह बहुत यश कमाने के कुछ साल बाद स्वर्ग-वासी हुआ। उसने दान-धर्म के द्वारा बहुत सा यश तो पाया। पर उसका खजाना खाली हो गया था। यहाँ तक कि कुछ दिन बाद उसके परिवार का समय गरीबी में कटने लगा।

इस मानसिंह के लड़के का नाम शैलसिंह था। शैलसिंह ने सेना में नौकरी करके गरीबी में भी अपनी मर्यादा बनाए रखी।

कुछ दिन बाद शैलसिंह भी स्वर्ग सिधारा। शैलसिंह के भी एक ही लड़का था जिसका नाम दादा की यादगारी में मानसिंह ही रखा गया था। गरीब हो जाने के कारण यह मानसिंह और उसकी माँ एक छोटे से घर में रहते थे और किसी तरह बड़ी मुश्किल से

सरजू प्रसाद

अपने दिन काटते थे। पैसे की बड़ी तङ्गी थी। पर मानसिंह की माँ ने किसी तरह पेट काट कर उसके पढ़ने का इन्तज़ाम कर दिया था।

एक दिन मानसिंह पाठशाला में पढ़ रहा था कि एक चारण ने आकर उसके अध्यापक से बातचीत के सिलसिले में कहा—'क्या कहूँ पण्डितजी! आजकल दान-धर्म करने वाला कौन है! यशोदेवी तो रावजी मानसिंह के साथ ही स्वर्ग सिधार गईं।' यह कह कर उसने एक कवित्त पढ़ा।

चारण की बात सुन कर नन्हे से मानसिंह को क्रोध भी आया और आनन्द भी हुआ। उसने तुरन्त अपने हाथ का एक सोने का कङ्कण उतार कर चारण को दे दिया।

यह देख कर चारण अचम्भे में पड़ गया और पण्डितजी से पूछने लगा—'यह नन्हा सा लड़का कौन है?'

तब पण्डितजी ने जवाब दिया—'यह लड़का उन्हीं रावजी मानसिंह का पोता है।'

तब चारण ने हर्षित होकर और एक कवित्त पढ़ा जिसका माने था—'मैंने समझा था कि यशोदेवी स्वर्ग सिधार गई है। लेकिन नहीं, वह यहीं मानसिंह के साथ रहती है।' इस तरह वह मानसिंह की प्रशंसा करते हुए सोने का कड़ा लेकर वहाँ से चला गया।

नन्हे मानसिंह ने जोश में आकर अपने हाथ का सोने का कड़ा निकाल कर चारण को दे तो दिया। लेकिन थोड़ी देर बाद वह मन ही मन यह सोच कर डरने लगा कि उसकी माँ उस पर गुस्सा होगी। यह सोच कर उसने अपना खाली हाथ माँ से छिपाने के लिए उस पर रूमाल लपेट लिया और शाम को डरते-डरते घर गया। घर पहुँचने

के बाद भी वह माँ से कतरा कर घूमने लगा। बहुत देर तक खाना खाने भी नहीं गया। उसे डर था कि माँ को कड़े की बात मालूम हो जाएगी।

आखिर माँ जब उसे खाने के लिए बुलाने गई तो उसने देखा कि हाथ पर रूमाल बँधा है। उसने समझा कि कोई चोट लग गई है। यह सोच कर उसने रूमाल खींच लिया तो देखा कि कड़ा नदारद। धीरे धीरे उसने बेटे से सारी बात जान ली। तब उसने गुस्से से कहा—'भोंदू कहीं का! क्या यही तेरी उदारता है!' यह कह कर उसने उसे एक तमाचा मार दिया।

'माँ! मुझे माफ करो! मैं अभी जाकर उस चारण को खोज कर अपना कड़ा वापस ले आता हूँ।' मानसिंह ने रोते हुए कहा।

तब उसकी माँ का गुस्सा और भी बढ़ गया। उसने कहा—'रे मूरख! मेरे कहने का मतलब यह नहीं था। रायजी मानसिंह के पोते होकर भी तुमने चारण को एक ही कड़ा दिया और एक कड़ा रख लिया। क्या यह तुम्हारी कंजूसी नहीं थी! क्या तुम्हारे

वंश के नाम पर यह एक कलङ्क न था! मुझे इसी से गुस्सा आ गया। इसलिए नहीं कि तुमने उसे कड़ा दिया। अच्छा, अब भी कुछ बिगड़ा नहीं। गाँव में जाकर खोजो कि वह चारण कहाँ है। उसे यह दूसरा कड़ा भी दे आओ! तभी तुम रायजी मानसिंह के पोते कहलाने लायक बनोगे!' माँ ने लड़के को फटकारा।

तुरन्त मानसिंह ने जाकर उस चारण को खोजा और उसे दूसरा कड़ा भी दे डाला। धीरे धीरे यह बात चारों ओर फैल गई और इससे उस वंश का नाम और भी बढ़ गया।

किसी समय पाटली-पुत्र पर उलुङ्गमुञ नाम का राजा राज करता था। उसके दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी के नन्द नाम का एक लड़का था। छोटी रानी के भी एक लड़का था। राजा उलुङ्गमुञ को संसार में किसी चीज़ की कमी न थी और वह अपनी दोनों रानियों के साथ सुख से दिन बिता रहा था।

इस तरह कुछ दिन बीत गए। तब न जाने क्यों, राजा का प्रेम बड़ी रानी से हट कर छोटी रानी पर बढ़ने लगा। इसका यही कारण हो सकता था कि छोटी रानी बड़ी ही सुन्दरी और खूब चतुर भी थी। धीरे-धीरे उसने फुसला कर राजा का मन अपनी तरफ मोड़ लिया।

कुछ दिन बाद बात यहाँ तक पहुँच गई कि राजा छोटी रानी का गुलाम बन गया। वह उसकी हरेक इच्छा पूरी करने लगा और उसके इशारों पर नाचना ही अपने जीवन का उद्देश्य समझने लगा। अगर बात इतने ही से रुक जाती तो कोई हर्ज न था। धीरे धीरे राजा बड़ी रानी और लड़के की बात ही भूल गया। यहाँ तक कि वह अब बड़ी रानी की कोई परवाह न करता था।

राजा को छोटी रानी का मोहताज बनते देख कर नौकर-चाकर सभी छोटी रानी के इशारों पर दौड़ने लगे और बड़ी रानी के प्रति लापरवाही दिखाने लगे। आखिर नन्द की बात भी वे लोग अनसुनी कर जाने लगे।

यह सब देख कर उस बेचारे को बहुत दुख होता था। लेकिन वह कर ही क्या सकता था! वह किसी तरह मुँह लटका कर मुश्किल से अपने दिन बिताने लगा।

एक दिन की बात है कि कपड़ों का एक बड़ा व्यापारी पाटलीपुत्र नगर में आया। वह अपने साथ बहुत ही बेशकीमती साड़ियाँ लाया था। जब उस व्यापारी ने किले में

देवनाथ

जाकर राजा के दर्शन किए तो उसने एक हजार अशर्फियाँ देकर एक रेशमी साड़ी खरीद ली और छोटी रानी को दे दी।

यह खबर बड़ी रानी को मालूम हो गई। वह बहुत दिन पहले ही समझ गई थी कि राजा का प्रेम अब उस पर नहीं रह गया। तो भी सौत को एक हजार अशर्फियों की साड़ी खरीद कर देते देख उसे बड़ा दुख हुआ।

आखिर जब उससे न रहा गया तो उसने राजा को कहला भेजा कि वह उसे भी एक ऐसी ही साड़ी खरीद दें।

यह सुन कर राजा ने आँखें लाल करके कहा—'अच्छा! उसकी यह मजाल! जाकर कह दे कि उसके लिए चीथड़े ही काफी हैं और वह फिर कभी ऐसी फर्माइश न करे।'

लौंडी ने जाकर यह बात बड़ी रानी से कह दी।

तब बड़ी रानी बहुत अफसोस करने लगी कि 'हाय! भगवान! मेरी ऐसी दुर्दशा हो गई!'

तब उसकी एक दासी ने जो बहुत ही चालाक थी उससे कहा—"रानीजी! आप क्यों सोच करती हैं? अगर आपको वैसी साड़ी पहनने की इच्छा है तो सुनिए, उसके लिए मैं एक उपाय बताती हूँ। आप व्यापारी से साड़ी ले लीजिए और वह जब रुपया माँगेगा तो कहिए—'मैं छः महीने बाद तुम्हारा रुपया दे दूँगी।'

यह कह कर वह और भी कुछ कहना चाहती थी कि रानी ने उसे रोक कर कहा—'अरी! तेरा कहना ठीक है। हम उधार ले सकती हैं। हम पर विश्वास करके शायद व्यापारी उधार दे भी देगा। लेकिन यह तो बताओ कि छः महीने बाद हम उधार चुकाएँगी कैसे? ऋण का बोझ सर पर लेना क्या

अच्छा है! क्या कीमती साड़ी उधार लेकर पहनने के बजाय फटे-पुराने चीथड़े पहनना ही अच्छा नहीं है! हमारे पास जो रुपया अभी नहीं है वह छः महीने के बाद कहाँ से आएगा! यहाँ कमा कर ला देने वाला तो कोई नहीं है।' रानी ने दासी की बात का विरोध किया।

तब उस चतुर दासी ने एक श्लोक कहा—'चतुर्भुज नाशो वा देश-काल विपर्ययः धनिकस्य विनाशो वा नन्दो राजा भविष्यति।' याने छः महीने के अन्दर हो सकता है कि राजा चतुर्भुज स्वर्ग सिधार जाएँ। या हो सकता है कि देश में ही क्रांति हो जाए। नहीं तो यह व्यापारी ही मर सकता है अथवा नन्द ही राजा बन सकता है। कौन कह सकता है कि छः महीने के अन्दर क्या से क्या हो जाएगा!

तब रानी ने कहा—'यह सब तो खैर भविष्य की बातें हैं। लेकिन सुनो, महाराज का प्रेम खोकर मुझे कीमती साड़ी पहनने से भी क्या आनन्द मिलेगा! क्या इससे अच्छा नहीं कि मैं गरीबी में ही किसी तरह अपने दिन काटूँ!' यों वह बड़े विरक्त भाव से बातें करने लगी।

तब उस दासी ने फिर कहा—'मालकिन! जब तक महाराज जिन्दा हैं और आपका सुहाग बना हुआ है तब तक तो आपको सिंगार-पटार करना ही होगा। अगर वे दौर्भाग्य-वश मर ही गए तो राज आपके लड़के के हाथ में आ जाएगा। तब आप व्यापारी का कर्ज सूद सहित चुका सकती हैं। तब अगर आप यह साड़ी पहनना न चाहें तो अपनी बहू को दे दीजिएगा। अगर यह सब न हो तो राजा का मन ही कुछ दिन बाद बदल सकता है। इस तरह जितना भी सोचती हूँ उतना ही मेरा निश्चय होता

जाता है कि आपको यह साड़ी खरीद लेनी चाहिए।'

आखिर दासी की बात रानी ने मान ली। उसके मन में सौतिया डाह की आग लगी हुई थी और वह अपनी सौत को नीचा दिखाने के लिए वह साड़ी खरीदना चाहती थी। इसके अलावा औरतें स्वभाव से ही कपड़े-लत्ते, गहने-जेवर वगैरह बहुत चाहती हैं। इन सब कारणों से उसे दासी की बात माननी पड़ी। उसने लौंडी को भेज कर व्यापारी को बुलवाया। छः महीने की मीयाद पर व्यापारी ने साड़ी दे दी। रानी से सेठ ने हुण्डी लिखवा ली।

रानी ने जब वह साड़ी पहनी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। अपनी माँ को खुश देख कर नन्द भी मन ही मन बहुत हर्षित हुआ।

उस दासी के लिए तो यह खुशी की बात थी ही। क्योंकि उसी की सलाह से रानी ने वह साड़ी खरीदी थी।

साड़ी खरीदे अभी चार महीने भी न हुए थे कि राजा उतुङ्गतुङ्ग बीमार पड़ा। दवा-दारू का कोई असर न हुआ। बीमारी दिन दिन बढ़ती गई। आखिर राजा ने समझ लिया कि उसकी मौत नजदीक आ गई है। तब उसने अपने मन्त्रियों को बुला कर कहा—'मन्त्री-गण! मेरी मृत्यु के बाद राजगद्दी मेरी छोटी रानी के लड़के को मिले। यही मेरी एक-मात्र इच्छा है। मैं आशा करता हूँ कि तुम लोग जरूर उसे पूरी करोगे।' यह कह कर राजा ने अपनी आँखें मूँद लीं और उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

राजा के मरने के बाद जब मन्त्रियों और दरबारियों ने एकत्र होकर विचारा तो उन्हें मृत राजा की इच्छा बिलकुल ही अनुचित

जान पड़ी। क्योंकि नन्द पटरानी का इकलौता लड़का था। शास्त्रों के अनुसार राज पर उसी का हक था। इसके अलावा राज के लोग भी सभी उसी से ज़्यादा प्रेम करते थे। विद्या, विनय, उदारता, सुन्दरता, शूरता आदि सभी गुण नन्द में मूर्तिमान थे।

छोटी रानी का लड़का बहुत छोटा भी था और राज की बागडोर सम्हाल भी न सकता था। यह सब सोचने के बाद राजा की इच्छा पूरी करने का उनका मन न हुआ। आखिर उन्होंने निश्चय किया कि नन्द ही राजा बनने योग्य है। यह सोच कर उन्होंने उसी का राज-तिलक किया।

नन्द ने गद्दी पर बैठते ही पहले उस व्यापारी को बुलवाया और उसे अपनी माँ की साड़ी का दाम दे दिया। इतना ही नहीं, उसने उसे एक हजार अशर्फियों का इनाम भी दिया।

इस तरह उस चतुर दासी के वचन के अनुसार ही नन्द छः महीने के अन्दर राजा हो गया। दासी के मुँह से निकली हुई बात में इतना प्रभाव था। इसलिए वह धीरे धीरे एक कहावत बन गई और उसका खूब प्रचार हो गया।

वास्तव में कोई नहीं कह सकता कि भविष्य में किसकी कैसी दशा होगी। इसलिए अब भी जब हम भविष्य की अस्पष्टता के बारे में कुछ कहना चाहते हैं तो झट मुँह से निकल जाता है—'नन्दो राजा भविष्यति।'

एक बार पाँच पाँडवों में से मझले भाई अर्जुन ने पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान शिवजी का ध्यान करना शुरू किया। आखिर उसके घोर तप से प्रसन्न होकर महादेवजी ने अर्जुन को दर्शन देने का निश्चय किया।

यह बात पार्वती को मालूम हो गई और उन्होंने अपने पति से कहा—'देव! मैं भी तुम्हारे साथ चलना चाहती हूँ। मैंने सुना है कि अर्जुन भारी वीर और अद्भुत धनुर्धारी है। मैं उसकी वीरता-धीरता देखना चाहती हूँ।'

शिवजी ने उनकी बात मान ली। दोनों ने किरात का वेश बनाया और अपने गणों के साथ उस जङ्गल में पहुँचे जहाँ अर्जुन तप कर रहा था। इतने में उन्हें एक जङ्गली सूअर दिखाई दिया। वे उसका पीछा करने लगे। वह सूअर भयङ्कर घर्घर ध्वनि करता हुआ अर्जुन के आश्रम की तरफ भागा।

उस कोलाहल के कारण अर्जुन का ध्यान भङ्ग हो गया। उन्होंने क्रोध से निकट ही पड़ा हुआ गाँडीव उठाया और सूअर पर तीरों की बौछार कर दी। उस सूअर का अंगुल-अंगुल शरीर तीरों से छिद गया।

इतने में किरात-वेश-धारी शिव-पार्वती वहाँ आ पहुँचे। 'तुम कौन होते हो हमारे शिकार पर तीर चलाने वाले?' भगवान ने अर्जुन से पूछा।

'क्या मजेदार सवाल है! सूअर ने मेरा ध्यान भङ्ग किया और मैंने उसे तीरों से बींध दिया।' अर्जुन ने जवाब दिया।

यों ही बात बढ़ गई और झगड़ा शुरू हो गया। अर्जुन और शिव अपने अपने हथियार चलाने लगे। उस युद्ध में अर्जुन ने अपनी पूरी कुशलता के साथ गाँडीव का प्रयोग किया। यह देख कर पार्वती मुग्ध हो गईं। थोड़ी देर बाद शिवजी ने किरात-रूप

कहानी वाले दादा

छोड़ कर अर्जुन को दर्शन दिए और उसकी वीरता की बड़ी प्रशंसा की। पाशुपत पाकर अर्जुन कृतार्थ हो गया।

झाड़ी में घायल पड़ा हुआ सूअर भयंकर पीड़ा से कराह रहा था। उसे देख कर पार्वती को बड़ी दया आई।

उस सूअर ने उनसे कहा—'माँ! तीरों के मारे मेरा सारा बदन छलनी हो गया है। अब मैं जी कर क्या करूँगा! इसलिए कृपा करके मेरे बदन में से तीर निकाल लो जिससे जल्दी मेरे प्राण निकल जाएँ और मुझे इस पीड़ा से छुटकारा मिले। मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ रहूँगा।' उस सूअर ने बड़े दीन-स्वर में कहा।

यह सुन कर शिवजी ने कहा—'तुम्हारे शरीर में जो तीर लगे हुए हैं, वे मामूली तीर नहीं हैं। ये अर्जुन के गांडीव से निकले हुए तीर हैं। किस की मजाल है जो उन्हें उखाड़ दे? इसलिए आओ! मैं तुम्हें ऐसा वर देता हूँ जिससे तुम्हारे बदन से तीर निकालने की जरूरत ही न हो। तुम्हारे बदन पर के ये तीर काँटे बन जाएँगे। इस तरह आज से सूअरों में तुम्हारी जात ही अलग हो जाएगी। इन काँटों से तुम्हारी सुन्दरता तो बढ़ेगी ही। साथ ही ये काँटे दुश्मनों से तुम्हारी रक्षा करने में भी काम आएँगे। इसलिए अब तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं।' यह कह कर उन्होंने थोड़ा सा गङ्गा जल लेकर उस पर छिड़क दिया।

तुरन्त उस सूअर की आह-कराह दूर हो गई और उसकी देह के तीर काँटे बन गए। उस दिन से जङ्गली सूअरों की जात ही अलग हो गई।

चन्दामामा पहेली

संकेत

बायें से दायें :

१. देवता

३. बड़ा

६. लोग

७. लक्ष्मी

८. झुकना

११. कमल

१३. झूठी बात

१५. सुन्दर

१६. अभिनय

१७. विचार

ऊपर से नीचे :

१. जो बूढ़ा न हो

२. चित्र

४. माला

५. मुसलमानों की पूजा

८. नया

९. आँख

१०. हाथ का गहना

१२. दया

१४. पर्दा

१५. एक संख्या

माता की पूजा

बड़ों की तरह बच्चों के लिए भी जीवन में कुछ कर्त्तव्य हैं। उनमें सब से प्रधान है माता की पूजा। माँ अपने बच्चों के लिए कितने कष्ट उठाती है! उसका प्रेम कितना गम्भीर है! क्या यह हर कोई नहीं जानता! संसार में माता का स्थान सबसे ऊँचा है। क्योंकि माँ अपने बच्चे के लिए अपने सब सुखों का त्याग करती है। अपने बच्चे की कुशल के सिवा वह संसार में और कुछ नहीं चाहती। वह बच्चों का सुख ही अपना सुख मानती है। उसके दुख से ही वह दुखित होती है। इस तरह माँ का मन दिन-रात अपने बच्चे पर लगा रहता है। उसका प्रेम महान है। इसीलिए बड़े कहते हैं कि हम माँ का कर्ज नहीं चुका सकते। इसलिए बच्चों को चाहिए कि वह ज्यों-ज्यों बड़े होते जायें, अपनी माँ को खुश करने की कोशिश करते जायें। इसमें उन्हें अपनी पूरी ताकत लगानी चाहिए। उन्हें माँ की हर आज्ञा माननी चाहिए। क्योंकि माँ जो कुछ करती है अपने बच्चों की भलाई के लिए ही। इसलिए बच्चों को चाहिए कि वे माँ पर अविचल विश्वास रखें और उसकी हरेक बात मानें। संसार में माँ के प्रेम से बढ़ कर कुछ नहीं है। माँ के प्रेम में स्वार्थ का लेश भी नहीं रहता। इसलिए बच्चों को देवी की तरह माँ की पूजा करनी चाहिए। 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'

तुम्हारी दीदी

साँझ

•

साँझ हुई, छाई अँधियाली।
डूब गई पश्चिम में, देखो!
मलिन सूर्य की धुँधली लाली।

चहक रहीं चिड़ियाँ पेड़ों पर
लौटीं घूम घूम कर दिन भर
बच्चों से मिल कर, खुश होकर
अपने कलरव के गीतों से
गुँजा रहीं हर तरु की डाली।

आसमान में उगते तारे
झलमल झलमल प्यारे प्यारे
ताक रहे जग को बेचारे
टुकुर टुकुर, पर पहुँच न पाती
हम तक उनकी सब उजियाली।

अब बाबूजी लौटेंगे घर
और खिलौने सुन्दर सुन्दर
देंगे हमको चुपके लाकर।
उनको घेर उछल-कूदेंगे
हम सब दे देकर करताली।

चन्दामामा पहेली का जवाब:

अ	म	र		म	हा	न
ज	न				र	मा
र		न	म	न		ज
		वी		य		
क		न	लि	न		क
ग	प				ना	रू
न	ट	ना		धा	र	णा

'मैं कौन हूं' का जवाब:

राणाप्रताप

शब्दों के खेल का जवाब:

१. अमर २. समर ३. कमर

४. चामर ५. तोमर ६. झूमर

७. पामर ८. अमर ९. उमर

तुम्हें याद होगा कि हमने एक रस्सी के तमाशे के बारे में बताया था, जो सरकार ने चन्दामामा के दफ्तर में आकर किया था। क्या तुम्हें याद है? हाँ, तो यह तमाशा भी उसी तरह का है। देखने में बड़ा मुश्किल जान पड़ता है। पर वास्तव में बड़ा आसान है। दर्शकों के सामने खड़े होकर अपने दोनों हाथ पसारो और दोनों हथेलियाँ जोड़ लो। दर्शकों में किसी से कहो कि वह एक रूमाल लेकर तुम्हारे दोनों हाथ कलाई के पास बाँध दे। उनसे कहो कि जिस जगह रूमाल की गाँठ लगी हुई है वहाँ स्याही से निशानी बना लें जिसमें उन्हें किसी तरह का शक न हो। नहीं तो वहाँ उन्हें मोहर लगाने को कहो। फिर कहो कि एक रस्सी लेकर रूमाल के पीछे से दोनों हाथों में से घुसा कर दोनों सिरे अपने हाथ में ले और गाँठ लगा लें। चाहें तो उन्हें उस गाँठ पर भी स्याही से निशानी बना लेने को कहो।

रूमाल बाँधना, रस्सी घुसाना और उसका दर्शक के हाथ पकड़ना, यह सब कैसे किया जाए; यह तुम बगल के पृष्ठ की पहली तस्वीर में देखो। अब दर्शक इस रस्सी को चाहे कितना भी खींचे, वह छूट कर नहीं आ सकती। अब तुम उससे कहो कि वह और एक रूमाल लेकर उससे तुम्हारे हाथ ढँक दे। ज्योंही वह ऐसा करेगा, तुम तुरन्त एक व्याख्यान देना शुरू कर दो। 'देखिए! अब यह रस्सी छूट कर नहीं आ सकती है न! हाँ, तो मैं एक, दो, तीन गिनूँगा। मेरे तीन कहते ही आप में से कोई आकर रस्सी खींचिए! देखें, क्या होता है!' तुम दर्शकों से कहोगे।

जब दर्शकों में से कोई आकर तुम्हारे कहने के मुताबिक रस्सी खींचेगा। बस, उन्हें यह देख कर बड़ा अचरज होगा कि जो रस्सी उनके बहुत कोशिश करने पर भी छूट कर न आती थी वह अब यों ही आ जाती है। इतना ही नहीं, उन्होंने रूमाल की गाँठ पर और रस्सी की गाँठ पर जो निशानियाँ बनाई थीं वे वैसी ही बनी रहती हैं। अब तुम पूछोगे—'यह कैसे सम्भव है?' इसका रहस्य सुनो—

ज्योंही रूमाल से तुम्हारे हाथों को ढँक दिया जाएगा त्योंही तुम दर्शकों को बातों में लगा कर, रूमाल के नीचे अपने हाथों से एक चालाकी करोगे। रूमाल के पीछे से आई हुई रस्सी को तुम अपने अँगूठे से चुपचाप आगे की ओर ले आओगे। तब वहाँ एक ऐंठन पैदा हो जाएगी। अगर यह तुम्हारी समझ में न आए तो दूसरा चित्र देखो। अब तुम उस ऐंठन में से अपना हाथ घुसेड़ो। तीसरा चित्र देखो तो यह तुम्हारी समझ में आ जाएगा। अब दर्शक आकर रस्सी खींचेगा तो वह यों ही छूट कर आ जाएगी।

इस तमाशे को सफलता-पूर्वक करने के लिए यह आवश्यक है कि तुम दर्शकों को

बातों में लगा रखो। अगर उनका मन तुम्हारी बातों में लगा रहा तो वे जान न सकेंगे कि तुम रूमाल के अन्दर क्या कर रहे हो!

[जो इस सम्बन्ध में प्रोफेसर साहब से पत्र-व्यवहार करना चाहें वे उनको 'चन्दामामा' का उल्लेख करते हुए अंग्रेजी में लिखें।

प्रोफेसर पी. सी. सरकार, मैजीशियन
१२/१ ए, अमीर लेन, बालीगंज, कलकत्ता, १९]

मैं कौन हूँ ?

•

मैं एक मशहूर हिन्दू वीर हूँ
जिसे आप सब लोग जानते हैं।

मेरे नाम का पहला अक्षर
. . . महाराज में है, पर
. . . बादशाह में नहीं।

मेरे नाम का दूसरा अक्षर
. . . धारणा में है, पर
. . . विस्मृति में नहीं।

मेरे नाम का तीसरा अक्षर
. . . प्रगल्भ में है, पर
. . . वाचाल में नहीं।

मेरे नाम का चौथा अक्षर
. . . अनुताप में है, पर
. . . आनन्द में नहीं।

मेरे नाम का पाँचवाँ अक्षर
. . . विलाप में है, पर
. . . विनोद में नहीं।

क्या तुम बता सकते हो
कि मैं कौन हूँ !

अगर न बता सको तो जवाब के लिए ५१-वाँ पृष्ठ देखो।

शब्दों का खेल

•

नीचे लिखे 'मर' नामक दो अक्षरों के पहले एक एक अक्षर जोड़ने से विभिन्न अर्थ वाले शब्द पैदा हो जाएँगे। बगल में इसके लिए संकेत दिए गए हैं। उन संकेतों की सहायता से इन शब्दों की पूर्ति करो।

१. देवता :: —मर

२. युद्ध :: —मर

३. देह का एक भाग :: —मर

४. चँवर :: —मर

५. एक छंद का नाम :: —मर

६. कान का एक गहना :: —मर

७. मूरख :: —मर

८. भौंरा :: —मर

९. आयु :: —मर

अगर तुम पूरा न कर सको तो जवाब के लिए ५१-वाँ पृष्ठ देखो।

बुन्दों में चोर !
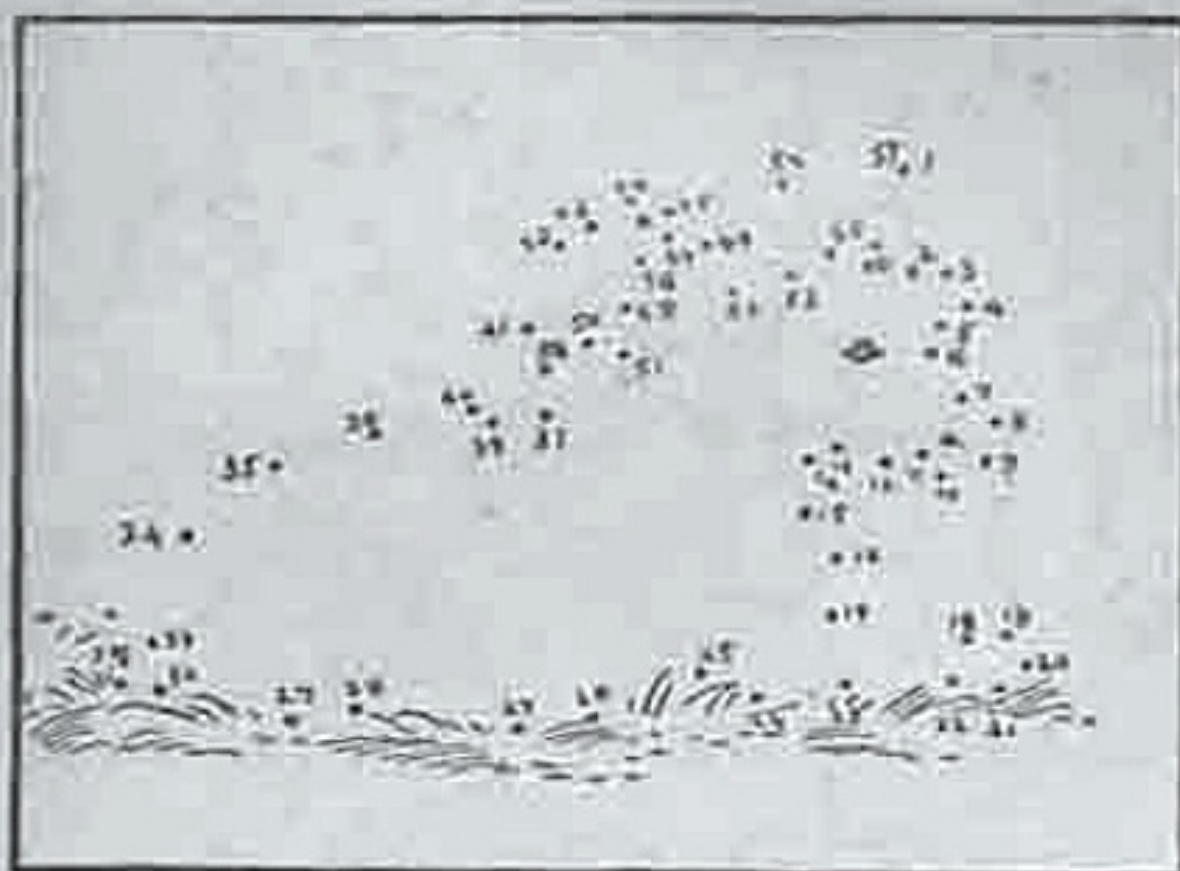
इन बुन्दों को लकीर खींच कर मिलाने से एक चित्र बन जाएगा।

जानकी देवी, मद्रास

इस तस्वीर को रंग कर अपने पास रख लेना और अगले महीने के चन्दामामा के पिछले कवर पर के चित्र से उसका मिलान करके देख लेना।

Controlling Editor : SRI CHAKRAPANI
Printed and Published by B. NAGI REDDI, at the B. N. K. Press, Madras - 1

Chandamama, June, '51 — Photo by T. Suryanarayana

वाह रे! वाह!

CHANDAMAMA (HINDI)   JUNE 1951   REGD. NO. M. 5452

किताब फाड़ कर रोती हो क्यों ?